TEE जून 2026 और TEE दिसंबर 2026 के लिए असाइनमेंट

पाठ्यक्रम: बीएजी दर्शनशास्त्र

कोर्स: तत्त्वमीमांसा, कोर्स कोड: बीपीवाईई- 141

नोट:

1. सभी पांच प्रश्नों का उत्तर दें।

2. सभी पांच प्रश्न समान अंक लाते हैं।

3. प्रश्न संख्या 1 और 2 के उत्तर लगभग 400 शब्दों में होने चाहिए।

4. यदि कोई प्रश्न में एक से अधिक भाग हैं, तो कृपया सभी भागों का उत्तर दें।

1. द्रव्य की अवधारणा को समझाएं और उसकी प्रकृति पर विस्तार से चर्चा करें। 20

या

सांख्य दर्शन के अनुसार *प्रकृतिपरिणामवाद* की व्याख्या और आलोचनात्मक रूप से परीक्षण कीजिए। 20

2. मानव स्वतंत्रता की अवधारणा पर इसके स्वरूप, सीमाओं और संकल्प स्वातंत्र्य की समस्या के संदर्भ में चर्चा कीजिए। 20

या

सामान्य (जाति) की समस्या पर निबंध लिखिए। न्याय-वैशेषिक दर्शन के अनुसार जाति के बाधक तत्त्व कौन से हैं? 10+10= 20

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों का उत्तर लगभग **200** शब्दों में दीजिए। 2*10= 20

क) इमैनुअल कांट के दर्शन में आभास और सत की समस्या पर निबंध लिखिए। 10

ख) तत्त्वमीमांसा क्या है और यह भौतिक संसार से परे वास्तविकताओं का अध्ययन कैसे करता है? 10

ग) अरस्तू का कारणता का सिद्धांत कैसे बाद के दार्शनिक विचारों को प्रभावित करता है?10

घ) बौद्ध दर्शन में सामान्य और विशेष का अंतर किस आधार पर किया गया है? 10

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों का उत्तर लगभग **150** शब्दों में दीजिए। 4*5= 20

क) हाइडेगर 'मृत्यु की ओर-होना' (Being-towards-death) का अर्थ दासाइन के अस्तित्व के संदर्भमें क्या समझाते हैं? 5

ख) अमरता को मानव व्यक्ति का एक अद्वितीय गुण क्यों माना जाता है? 5

ग) जॉन डंन्स स्कॉटस के दर्शन में वैयक्तिकरण की विचारधारा का वर्णन कीजिए।

घ) प्रतीत्यसमुत्पाद (Pratityasamutpada) के विचार का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए। 5

ङ) आभास और सत की समस्या के संदर्भ में गुफा के रूपक (Allegory of the Cave) के दार्शनिक निहितार्थ पर चर्चा कीजिए। 5

च) क्या आप सोचते हैं कि आकस्मिकता अपना स्वयं का 'होना' रखती है? अपने उत्तर को प्रमाणित कीजिये। 5

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **पांच** पर लगभग **100** शब्दों में संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। 5*4= 20

क) परात्परता (Transcendence) 4

ख) अराजकता सिद्धांत (Chaos Theory) 4

ग) परिकल्पनात्मक पद्धति 4

घ) उपाधि 4

ङ) गैब्रियल मार्सल की व्यक्ति की अवधारणा 4

च) समवाय 4

छ) विवर्तवाद 4

ज) सत्ता (Entity) 4

1. द्रव्य की अवधारणा को समझाएं और उसकी प्रकृति पर विस्तार से चर्चा करें। 20

उत्तर

द्रव्य का अर्थ

तत्त्वमीमांसा में 'द्रव्य' से आशय ऐसी मूल सत्ता से है जो अपने गुणों और अवस्थाओं का आधार बनती है। अंग्रेजी में इसके लिए Substance शब्द प्रयुक्त होता है, जिसका मूल अर्थ है—वह जो किसी वस्तु के गुणों के नीचे या पीछे टिके हुए आधार की तरह रहता है। हम किसी आम को पीला, मीठा, गोल या भारी कहते हैं। रंग, स्वाद, आकार और भार बदलने वाले गुण हैं, लेकिन इन गुणों को हम किसी न किसी वस्तु के गुण मानते हैं। इसी आधारभूत वस्तु को द्रव्य कहा जाता है। इस प्रकार द्रव्य का प्रश्न केवल यह नहीं है कि कोई वस्तु कैसी दिखाई देती है, बल्कि यह है कि वह वस्तु अपने गुणों के पीछे क्या है और किस अर्थ में उसका अपना अस्तित्व है।

द्रव्य और गुण का संबंध

द्रव्य को समझने का सबसे सरल तरीका उसे 'गुण' या 'आकस्मिक धर्म' से अलग करके देखना है। द्रव्य वह है जिसमें गुण विद्यमान होते हैं, जबकि गुण सामान्यतः स्वतंत्र रूप से नहीं पाए जाते। किसी मेज का रंग बदल सकता है, उस पर खरोंच आ सकती है या उसका स्थान बदल सकता है, फिर भी हम कुछ सीमा तक उसे वही मेज मानते हैं। इसलिए द्रव्य परिवर्तन के बीच पहचान और निरंतरता का आधार माना जाता है। इसका अर्थ यह नहीं कि द्रव्य हमेशा बिल्कुल अपरिवर्तनीय है; बल्कि यह कि कई गुणों के बदलने पर भी किसी वस्तु को एक संगठित 'यह वस्तु' के रूप में पहचानने के लिए हमें किसी आधार की आवश्यकता होती है।

अरस्तू की दृष्टि

द्रव्य की व्यवस्थित चर्चा अरस्तू के दर्शन में विशेष रूप से मिलती है। उसकी 'Categories' में व्यक्तिगत वस्तुओं—जैसे यह मनुष्य या यह घोड़ा—को प्राथमिक द्रव्य माना गया है, क्योंकि वे किसी अन्य विषय के गुण मात्र नहीं हैं। प्रजाति और जाति, जैसे 'मनुष्य' और 'प्राणी', द्वितीयक द्रव्य कहे जा सकते हैं, क्योंकि वे बताते हैं कि कोई व्यक्तिगत वस्तु क्या है। बाद की तत्त्वमीमांसीय चर्चा में अरस्तू द्रव्य को पदार्थ और रूप के संयुक्त वास्तविक अस्तित्व के रूप में समझाता है। केवल